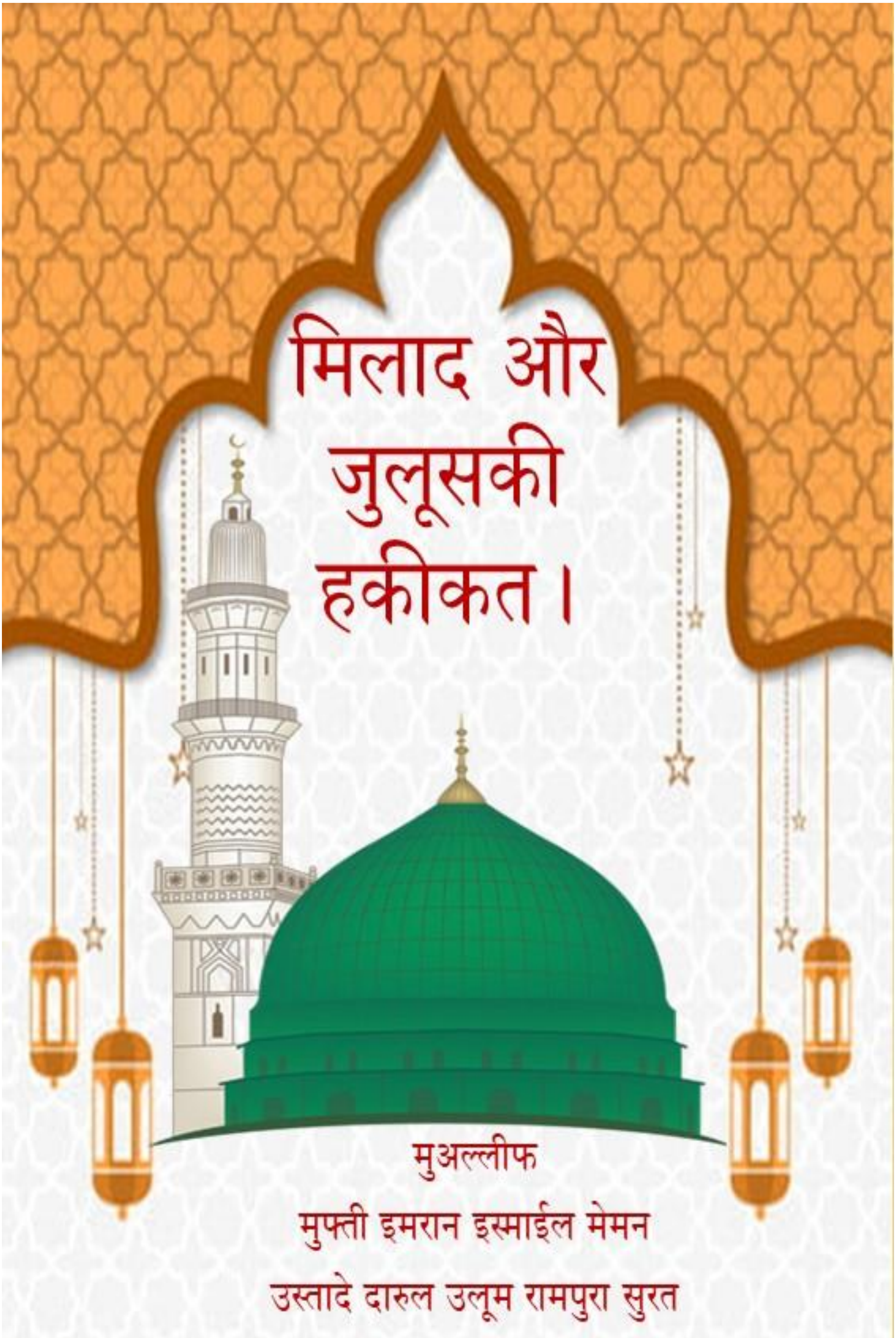
मिलाद और
जुलूसकी
हकीकत।
मुअल्लीफ
मुफ्ती इमरान इस्माईल मेमन
उस्तादे दारुल उलूम रामपुरा सुरत

म्सअला नंबर	फेहरिस्ते मज़ामीन	पेज नंबर
१	पेश ए लफ्ज	४
२	क़ुराने करीमका नुज़ूल मुकम्मल होने का अहम् दिन।	७
३	अल्लाह और रसुल ﷺ की मुहब्बत जान ने का थर्मोमीटर।	१२
४	गैरों के तरीके पर मत चलो।	१५
५	अहले सुन्त व जमात की १० पहचान।	१८
६	जश्न ए मिलादु-न्नबी की हैसियत।	२१
	मीलाद की शुरुआत।	२६
७	रबी-उल-अव्वल में और मुर्हरम का बयान रखने और सुनने का हुक्म।	२८
८	मीलाद न मानाने वाले बरेलवी उलमा।	३०
९	अबू लहब ने भी मिलाद-ए-मुस्तफा सल्ललललाहू अलयाही वसल्लम मनाया ?	३६

१०	बरेलवियों के मिलाद उन नबी के मुतालिक दलील और उनका रद।	३८
११	मिलाद व मवलूद पर तमाम दलीलों का जवाब।	४१
१२	मीलाद् की नियाज़ खाने का हुक्म।	४४
१३	बाल मुबारक।	४७
१४	हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की विलादत की सहीह तारिख।	५०
१५	ईद मिलादुननबी की हकीकत।	५१
१६	आप ये बताएं की ये पोस्ट कितनी सही है और कितनी नहीं।	५९

पेश ए लफ्ज़

अल्हमदुलिल्लाह मसाइल का सिलसिला "आज का सवाल " के उनवान से ८ आठ साल से जारी है इस में तेहवार,हालत और मव्के की मुनासिबत से भी मसाइल आते रहते है। और थोड़ा थोड़ा कर के एक ही मवज़ू पर बहोत से मसाइल को अल्लाह ने जमा करा दिया है। इसी तरह पैगाम व मसाईल के नाम से भी कुर्आन ए करीम की अक्सर आयतों की तफ़सीर लिखने का सिलसिला “ सुरए फातिहा ” से अल्लाह तआला ही की तौफीक से शुरुअ किया था , जो पोने तीन पारे तक, तकरीबन ३०० आयात तक अल्हम्दुलिल्लाह पोंहचा है, और उस के अलावा जो आयतें मवका महल के ऐतिबार से होती है, उस की तफ़सीर भी लिख दी गई है।

मावज़ूअ की तमाम आयतों को घेरना मक़सूद नहीं, उसे में से मसाईल की मुनसबत से आयत का इंतिख़ाब कर के किताब में रख दी गई है, ताकी मसाईल के साथ साथ क़ुरान ए करीम की भी रहनुमाई हसिल हो।

बाज दोस्तों ने खाहिश की के इन मसाइल को पी.डी.एफ. की शकल में जमा कर के शोशयल मीडिया पर आम कर दिया जाए ताके लोगों का फायदा उठाना और फाइदा पहुंचाना आसान हो जाए।

लिहाजा अल्लाह पर तवक्कुल कर के ये काम शुरू कर दिया गया है। अल्हम्दु लिल्लाह।

दुआ फरमाए अल्लाह तआला इस सिलसिले को दिन के हर मवजूअके एअतेबारसे मुकम्मल फरमाए। और बंदे और बंदे वालीदैन, असातीजाह, खुसूसन बंदे के पिरो मुर्शीद हजरत मुफ्ती अहमद खानपूरी दामत बरकातुहुम (ये और तमाम खिदमात आप ही की तवज्जुह और दुआ का नतीजा है।)(अल्लाह तआला आपके साए को हम तमाम पर और उम्मत के हर फर्द पर आफियत के साथ, ता देर काईम रखे) (आमीन सुम्मा आमीन)।

और तरजमे में तावून करने वाले और इस काममे साथ देनेवाले मेरे तमाम दोस्तों के हक में सदह ए जरिया और नजात का जरिया बनाए। (आमीन सुम्मा आमीन)।

अगर किसी को ये रिसाला चपवाना हो, तो उसे छपवाकर नाचीज की तरफ से " मुफ्त तकसीम करने " और " फारोख्त करने" की मुकम्मल इजाजत है।

""""अखीर में नाजीरीन (पढ़ने वालों) से दरखास्त है, के उस में कोई भी गलती मालुम हो या कोई मुफीद मशवरा तो बंदे को खबर करे"""" जजाकल्लाह।

:: अहकर::

इमरान इस्माइल मेमन।

+९१ ९६८७३ ४१४१३

३ रबीउल अव्वल १४४५ हिजरी

१९ सितंबर – २०२३।

♦ क़ुराने करीमका नुज़ूल मुकम्मल होने का अहम् दिन।

क़ुरआन का पैग़ाम

أعوذُبِاللهِمِنَ الشَّيْطانِ الرَّجيم

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ﴿۳﴾

तरजमह

आज में पूरा कर चूका हूँ तुम्हारे लिए दिन और पूरा किया तुम पर में ने ऐहसान अपना और पसन्द किया में ने तुम्हारे वास्ते इस्लाम को ।

आज में पूरा कर चूका हूँ तुम्हारे लिए दिन और पूरा किया तुम पर में ने ऐहसान अपना और पसन्द किया में ने तुम्हारे वास्ते इस्लाम को दिन।

तफ़्सीर

आयत हिजरत के दसवे साल हज्जतुल विदा के यवमे अरफ़ा में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुयी, जब के

मक्का और तक़रीबन सारा अरब फ़तह हो चूका था। पुरे जज़ीराचल अरब पर इस्लामी क़ानून जारी था। उस पर फ़रमाया के आप से पहले जो कुफ्फार ये मनसूबे बनाया करते थे के मुसलमानों की जमात हमारे मुक़ाबले में कम भी हे और कमज़ोर भी, उनको ख़तम कर दिया जाए। अब न उनमे ये होसले बाक़ी रहे, न उनकी वो ताकत रहि। इस्लिये मुसलमान उनसे मुतमईन हो कर अपने रब की ईताअत व इबादत में लग जाए।

इस आयत के नुज़ूल की खास शान हे, अरफ़ा का दिन हे, जो तमाम साल के दिनों में दिनों का सरदार है और इत्तिफ़ाक़ ये के अरफ़ा जुम'आ के दिन वाक़ेअ हुआ। जिस के फ़ज़ाइल मशहूर हे। मक़ाम मैदान अराफ़ात का जबले रहमत के क़रीब हे, जो अरफ़ा के दिन अल्लाह त'आला की तरफ से नुज़ूले रहमत का खास मक़ाम हे। वक़्त असर के बाद का हे, जो आम दिनों में भी मुबारक वक़्त हे। और ख़ुसूसन यवमे जुम्आ में क़बूलियते दुआ की घडी बहोत सी रिवायात के मुताबिक़ उसी वक़्त आती हे। और अरफ़ा के दिन और ज़्यादा खुसूसियत के साथ दुआएँ क़ुबुल होने का खास वक़्त हे।

हज के लिए मुसलमानो का सब से बड़ा पहला अज़ीम इज्तिमा हे, जिस में तक़रीबन डेढ़ लाख सहाबा किराम (रदि अल्लाहुअन्हुम)

शरीक थे। रहमतुल्लील आलमिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा के साथ जबले रहमत के निचे अपनी उटनी "अजबा" पर सवार हे। और हज के अब बड़े रुक्न यानी वुक़ूफ़े अरफ़ा में मशग़ूल हे।

इन फ़ज़ाइल व् बरकत और रहमतों के साये में ये आयते करीमा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होती हे। सहाबा ए किराम रदिअल्लाहुअन्हुम का बयान हे के जब आप पर ये आयत ब जरिया ए वही नाज़िल हुयी तो हस्बे दस्तुर वही का भारीपन और बोझ इतना महसूस हुआ के ऊँटनी उससे दबी जा रही थी यहाँ तक के मजबूर हो कर बैठ गयी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदि अल्लाह अन्हुमा फ़रमाते हे के ये आयत तक़रीबन क़ुरान की आखरी आयत हे। इस के बाद अहकाम के मुताल्लिक़ कोई आयत नाज़िल नहीं हुयी। सिर्फ तरग़ीब-फ़ज़ाइल व् तर्हिब-वइद की चंद आयते हे। जिनका नुज़ूल इस आयत के बाद बतलाया गया हे। इस आयत के नाज़िल होने के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया में सिर्फ इक्यासी (८१) रोज़ बा क़ैदे हयात रहे। क्योंकि १० हिजरी की नव ज़िलहिज्जह में

ये आयत नाज़िल हुयी। और ११ हिजरी की १२ रबिउल अव्वल को आप हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात हो गयी।

ये आयत जो इस खास शान और इहतिमाम से नाज़िल हुयी उसका मफ़हूम है की मिल्लते इस्लाम और मुसलमानों के लिए एक बड़ी खुशखबरी और भारी इनाम और इस्लाम की बड़ाई की निशानी हे। जिसका खुलासा ये हे के दिन ए हक़्क़ और नेअमते इलाही का सब से बड़ा थर्मोमीटर जो इस आलम के तमाम इन्सान को अता होने वाला था, आज वो मुक़म्मल कर दिया गया। गोया हज़रत आदम (अ।स।) के ज़माने से जो दीन और नेअमत ए इलाहिय्या का नुज़ूल और तरवीज- (रिवाज) शुरू किया गया था और हर ज़माना और हर खित्ता के मुनासिब हाल इस नेअमत का एक हिस्सा अवलादे आदम को अता होता रहा आज वो दीन और नेअमत मुक़म्मल सूरत में ख़ातिमुल अम्बिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मत को अता कर दी गयी।

इस में तमाम अम्बिया व् रसूल के ज़ुमरे में सय्यदुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुश नसीबी और इम्तियाज़ी शान का तो इज़हार हे हि, इस के साथ तमाम उम्मतों के मुक़ाबला में

उम्मते मुहम्मदीया की भी एक खास इम्तियाज़ी शान का वाज़िह सुबुत हे।

यही वजह हे के एक मर्तबा चंद उलमा ए यहूद, हज़रत फ़ारुक़ इ आज़म रदि की ख़िदमत में हाज़िर हुये और अर्ज़ किया के तुम्हारे क़ुरान में एक ऐसी आयत हे जो अगर यहूद पर नाज़िल हुयी होती तो वो उसके नुज़ूल का एक जशने ईद मनाते। फ़ारूक़ी आज़म रदि ने सवाल किया के वो कौनसी आयत हे ? उन्होंने यही आयत "अल-यव्म एक्-मलतु लकुम दीनकुम" पढ़ दि।

हज़रत फ़ारूके आज़म रदि ने उनके जवाब में फ़रमाया के, "हाँ तुम जानते हे के ये आयत किस जगह और किस दिन नाज़िल हुयी।" इशारा इसी बात की तरफ था के वो दिन हमारे दोहरी ईद का दिन था, एक अरफ़ा दूसरे जुम्आ । (बाक़ी आईन्दा)

📒 **सुरह माइदह।** ⭕ **आयत ३।**

📗 **तफ़्सीर ए मारिफुल कुरान से माखूज़।**

واللہ اعلم بالصواب

♦ अल्लाह और रसुल ﷺ की मुहब्बत जान ने का थर्मोमीटर।

🌹 क़ुरआन का पैग़ाम 🌹

أعوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطانِ الرَّجيم

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ وَ یَغۡفِرۡ لَکُمۡ ذُنُوۡبَکُمۡ ؕ وَ اللّٰہُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۳۱﴾

तरजमह

(ए पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! लोगो से)

आप कहिए : कि अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबा करो (मुजे फॉलो करो), अल्लाह तआला तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे खातिर गुनाह मुआफ कर देगा, और अल्लाह तआला बहुत मुआफ करने वाला बड़ा महेरबान है।

तफ़्सीर

दुश्मनाने खुदा की दोस्ती और मुहब्बत से मना करने के बाद खुदा से मुहब्बत करने की क्वालिटी और थर्मामीटर बताते हैं।

मुहब्बत एक छुपी हुई चीज़ है, किसी को किसी से मुहब्बत हे या नहीं, और मुहब्बत कम हे या ज़्यादा, इस का कोई पैमाना (माप – दंड) इस के अलावा नहीं है, के हालात और मुआमलात से अंदाज़ा किया जाये, मुहब्बत का कुछ असर (संकेत) और निशानी होती है, उससे मालूम किया जाए।

📗 **(अज़ मआरिफ़ुल कुरआन)**

किसी को किसी हीरो से या किसी क्रिकेटर से मुहब्बत है, तो वो उसका तजकिरा करेगा, और अपना चेहरा, अपना हियर कट, स्टाइल, इसी तरह कपडे वगेराह में उसकी कॉपी करता है।

📗 **(अज़ अहकर / अपनी तरफ से)**

अगर दुनिया में आज किसी शख़्स को अपने मालिक ए हक़ीक़ी की मुहब्बत का दावा, या ख्याल हो, तो ज़रूरी है कि हमें "इत्तिबा ए मुहम्मदी ﷺ की कसौटी पर परख कर देख लें", सब खरा खोटा (सही या गलत) मालूम हो जाएगा.

जो शख्स जिस कदर हबीब ए खुदा "मुहम्मद ﷺ" की राह पर चलता है और आप ﷺ की लाई हुई रोशनी को माश’अले राह

(Beacon - Light) बनाता है। उसी कदर समझना चाहिए के खुदा और उसके रसूल ﷺ की मुहब्बत के दावे में सच्चा होगा, इतना ही हुजूर ﷺ की पैरवी / फॉलो करने में मज़बूत और तय्यार पाया जाएगा।

📗 **(तफ़सीर ए उस्मानी)**

मुहब्बत सिर्फ ज़बान से मुहब्बत जाहिर करने और ना'अत शरीफ पढ़ने का नाम नहीं है, बलके हमें अमल से जाहिर होना चाहिए केह रसूल ﷺ की इत्तिबा और पैरवी/फॉलो करना भी हो, जो शखश आप ﷺ की इत्तिबा तो : न करता हो, मगर ज़बान से अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बतका खुल्लम खुल्ला (In Sarwajanic) दावे करता हो, वो इस मुहब्बत से महरुम (Lose) है, जो दिन में मतलुब (Required) है।

📗 **(आसान तफ़सीर)**

जिस का फल - नातिजा ये मिलेगा के हक सुबहानहु व ता'आला हमसे से मुहब्बत करने लगे गा, और अल्लाह तआला की मुहब्बत और हुजूर ﷺ के इत्तिबा/ फॉलो करने की बरकत से पिछले - अतीत के गुनाह मुआफ हो जाएंगे, और आइंदह तरह तरह की जाहिर और बातिनी/ अंदरुनी महेरबानिया मबज़ुल (आकर्षित) होगी।

गोया तौहीद वगेरह के बयान से फारिग हो कर यहां से नबुव्वत का बयान शुरू किया गया है, और पैगंबर ए आखिरुज्जमां ﷺ की इताअत की दावत दी गई।

📗 तफ़सीर ए उस्मानी।

🔰 **सुरह ए तौबा।**

⭕ **आयात - ३१।**

والله اعلم بالصواب

♦ गैरों के तरीके पर मत चलो।

🌹 कुर्आन का पैगाम 🌹

أعوذُبِاللهِمِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجيم

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا ادۡخُلُوۡا فِى السِّلۡمِ كَآفَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوۡا خُطُوٰتِ الشَّيۡطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَـكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿۲۰۸﴾

तरजमह

इमान वालों इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के नक्शे कदम पर मत चलो बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है

तफ़सीर

अब्दुल्लाह इब्ने सलाम वगैरा सहाबा पहले यहूदी थे फिर मुसलमान हुए यहूदी के नजदीक सनीचर का दिन काबिले ताझीम था और ऊंट का गोश्त और दूध पीना हराम था तो उन्होंने सोचा कि इस्लाम में सनीचर के दिन की ताझीम करना मना नहीं है तो हम ताजिम करें और ऊंट का गोश्त और दूध पीना वाजिब नहीं है तो उस से परहेज करे ऐसा करने में दोनों शरीअत पर अमल हो जाएगा इस पर आयत नाजिल हुई कि जब तुम इस्लाम ले आए तो इस्लाम के तमाम तोरो-तरीक पर अमल करो किसी दूसरी शरीअत के किसी भी चीज पर अमल मत करो इस्लाम मुकम्मल झाब्तए हयात है उसमें अकाइद,इबादात, मुआशरत, मुआमलात, अखलाकियात, पर्सनल लाइफ, इजतिमाइ जिंदगी हर शोबे की मुकम्मल रहनुमाई मौजूद है हमें किसी दूसरे मजहब के तरीके में कोई फायदा देखते हुए या अपन अक्ल से अच्छा समझते हुए उसे इख्तियार न करें। इस आयत ने बीद्अत और गैरों के तरीके पर चलने का दरवाजा बंद कर दिया है इससे बरेलवी उलेमा की बात पर चलने की और गैरों के तरीके को अपनाने की बहुत अहम समझी जाने वाली दलील का जवाब हो गया

कि इस्लाम ने उसे मना नहीं किया है इसलिए हम कर सकते हैं यह शैतानी दलील है जिस की बातों में न आने का इस आयत में हुक्म है शरीअत ने मना नहीं किया जैसे हुजूर सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के मिलाद पर लाइटिंग करना, सब का बर्थडे मनाना, १२ - रबीउल अव्वल पर जुलूस निकालना वगैरा यह सब गैरों के तरीके है सनीचर का दिन मनाना इस्लाम में कहां मना है यही तो अब्दुल्लाह इब्ने सलाम रझीयल्लाहु तआला ने सोचा था किसी काम को अपने अक्ल से अच्छा समझते हुए उसे दिन में दाखिल करना भी बिद्अत है जैसे क़ब्रों पर फूल, चादर चढ़ाना, दीया, अगरबत्ती करना वगैरा और लिबास, बाल खुशी,गमी के मौके पर किसी ऐसे तरीके की जिसमें गैर मजहब बल्कि शुयुन की मुशाबहत भी भी होती हो या जिसका शरइ सबूत न हो उसकी इजाजत नहीं। हमें तो गैरों के तरीकों की मुखालफत का हुक़्म है इस्लाम में खुशी और गमी का भी मुकम्मल तरीका बताया है लिहाजा हर शोअबे के दिन पर अमल करना है किसी भी शोअबे के इस्लाम को नहीं छोड़ना है।

सूरह बकरह **आयत :२०९**

तफसीर इब्ने कसीर, मआरीफुल कुर्आन व उस्मानी से माखुझ

♦ अहले सुन्त व जमात की १० पहचान।

अस्सवाल

- अहले सुन्नत वल जमात जिस के बारे में हदीस में नजात पाने का इशारह है। उस फ़िरक़े की अलामत हदीस और साहबा ए किराम के अक़वाल की रौशनी में क्या है ?
- यहाँ दूसरे फ़िरक़े भी अपने को अहले सुन्नत में समझते है, ताके सहीह अक़ाइद व आमाल पर सब आ जाए और आज के फिरका परस्ती और दुश्मनो की साज़िश के दौर में जिस इत्तिहाद की सख्त ज़रुरत है लोग मुत्तहिद हो जाए।

अलजवाब

حامدا و مصلیا و مسلما

तकमिलाह-ए-बहरूर राइक (अल्लामा इब्ने नूजेम की किताब जीनकी तहक़ीक़ को बरेलवी मसलक के उलमा भी मानते है) उस में हज़रत इब्ने उमर रदीयल्लाहु अन्हु की रिवायत से हदीस का खुलासाह मनक़ूल है के :

जिस में दस अलामतें - निशानी हो वह अहले सुन्नत वल जमात हैं वह दस अलामतें ये हैं।👇

१. पांच वक़्त की नमाज़ बा जमात पढ़ना।

२. सहाबा में से किसी का ज़िक्र बुराई के साथ न करे, न किसी में ऐब निकाले।

३. मुसलमान बादशाह के खिलाफ तलवार न उठाये, यानि उस से बगावत न करे। उसे काफिर न कहे।

४. अपने ईमान में शक न करे, अपने को वुसूक़ - यक़ीन से मु'अमिन और मुस्लिम कहे। (फ़िरक़ह बंदी न करे)

५. भली और बुरी तक़दीर पर ईमान रखता हो के जो कुछ है ख़ुदा ए पाक की तरफ से है।

६. ख़ुदा के दीन में झगडे न करे (बिला दलील बहस न करे और फलसफ़ाह न बघारे)

७. किसी गुनाह की वजह से अहले तौहीद - अल्लाह को एक मानने वाले मुसलमान को काफिर न कहे।

नोट: मतलब यह है के ७२ बहत्तर फिरके सब अहले तौहीद व अहले किब्लह है, लिहाज़ा उन की तकफीर -काफिर कहने की हिम्मत न करे जब तक के किसी फिरके के मुताल्लिक़ ये साबित न हो जाये के वह ज़रूरियाते दीन और किसी एसी बात का इनकार करने वाला है जो खुले तौर पर इस्लाम की बात मानी जाती है, और जब तक यह साबित न हो जाये के वह अहकामे शरीय्याह के तवातुर (जो बात

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेयही वसल्लम के ज़माने से आज तक लगातार साबित हो) उसको नहीं मानता उन को गैर साबित और गैर यक़ीनी न कहता है उस को काफिर न कहे।

फुक़हा ने फ़रमाया अगर ९९ निन्नानवे एहतिमाल - चान्सेस कुफ्र के हों और एक एहतिमाल -बात का मतलब इस्लाम का मव्जूद हो तो उस एक एहतिमाल की वजह से कुफ्र का हुक्म न लगाया जाये।

📗 **मक़्तूबात ए इमामे रब्बानी जिल्द ३, सफ़ा ७० मकतूब नं.३८।**

८. अहले किब्लह (किब्लह की तरफ नमाज़ पढ़ने वाला मुस्लमान) में से जो मरे उस की नमाज़े जनाज़ह न छोड़ता हो।

९. सफर व हज़र (मक़ाम) में (चमड़े के) मोज़ों पर मसह करने का काइल हो (मानता हो)

१०. हर नेक और गुनाहगार के पीछे नमाज़ को जाइज़ समझता हो।

📘 **फतावा रहीमीयाह २ /५६ करांची। बा हवाला** 👇

📗 **तक्मीलह ए बहरूर राइक जिल्द ८ सफ़ा १८२। अव्वल किताबुल कराहियत।**

والله اعلم بالصواب

♦ जश्न ए मिलादु-न्नबी की हैसियत।

कुरआन का पैग़ाम

أعوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطانِ الرَّجيم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ﴿٣﴾

तरजमह

आज में पूरा कर चूका हूँ तुम्हारे लिए दिन और पूरा किया तुम पर में ने ऐहसान अपना और पसन्द किया में ने तुम्हारे वास्ते इस्लाम को दिन।

तफ़सीर

फारुक़े आज़म रदि के इस जवाब में एक इस्लामी उसूल की तरफ भी इशारा हे। जो तमाम दुनिया की अक़्वाम और मज़ाहिब में सिर्फ इस्लाम ही की सब से अलग बेह्तरीन ख़ूबी हे। वो ये के दुनिया में हर क़ौम और हर मज़हब व् मिल्लत के लोग अपने अपने हालात व् खुसूसियत के ऐतिबार से अपने खास खास तारीख़ी वाक़िआत के

दिनों की यादगार मनाते हे, और इन दिनों को उन के यहाँ ईद या त्यौहार की हैसियत हासिल होती हे।

कहीं, क़ौम के बड़े आदमी की पैदाइश या मौत का या तख्त नशिनी-बादशाह बनने का दिन मनाया जाता हे और कहीं किसी खास मुल्क या शहर की फ़तह या और किसी अज़ीम तारीख़ी वाक़िआ जिस का हासिल खास लोगों की इज़्ज़त अफ़ज़ाई के सीवा कुछ नहीं होता। इस्लाम अश्ख़ास— खास लोगों की परस्ती- पूजा को नहीं मानता है। उस ने इन तमाम रुसुमे जाहिलियत और शख्सी यादगारों को छोड कर खास उसूल और मक़ासिद की यादगारें क़ाइम करने का उसूल बना दिया।

हज़रत इब्राहिम अ.स. को ख़लीलुल्लाह का ख़िताब दिया गया और क़ुरान करीम में उन के इमतिहानात और उन सब में मुक़म्मल क़ामयाबी की तारीफ की गयी। लेकिन न उनकी कामयाबी के दिन या पैदाइश या मौत का दिन मनाया गया। न उनके साहबज़ादे इस्माइल अ।स। और न उनकी वालिदा की पैदाइश व मौत या दूसरे हालात की कोई यादगार क़ायम की गयी।

हा, उनके आमाल में जो चीज़ें मक़सदे दिन से मुता'अललीक थे, उनकी यादगारों को न सिर्फ महफूज़ की गयी बल्कि आईन्दा आनेवाली नस्लों के दिन व मज़हब का हिस्सा और फ़र्ज़ व वाज़िब करार दे दिया गया। क़ुर्बानि, खतना, सफा व मरवा के दरमियाँन दोडना, मीना में तीन जगह कंकरियां मारना, आबे ज़मज़म उन्ही बुजृगों के ऐसे कामो की यादगार हे जो उन्होंने अपने नफ़्सानी जज़बात और इन्सान के तबीयत के तक़ाज़ों को अल्लाह तआला की रजा जोई के मुक़ाबले कुचलते हुये अदा किये। और जिन्मे हर दौर और हर ज़माने के लोगों को उसका सबक़ मिलता हे के इन्सानो को अल्लाह तआला की रजा जोई के खातिर अपनी महबूब से महबुब चीज़ को क़ुर्बान कर देना चाहिए।

ईसी तरह इस्लाम में किसी बड़े से बड़े आदमी की मौत व हयात या शख्सी हालत का कोई दिन मनाने के बजाये उनके आमाल के दिन मनाये गए। जो किसी खास इबादत से मुता'अललीक हे जेसे शबे बरात, रमज़ानुल मुबारक, शबे क़दर, यवमे अरफा, यवमे आशूरह, वगैरह।

ईदै सिर्फ दो रखी गयी। वो भी खालिस दीनी लिहाज़ से। पेहली ईद रमज़ानुल मुबारक के ख़त्म पर और हज के महीने शुरू होने पर रखी गयी। और दूसरी ईद इबादते हज से फरागत के बाद रखी गयी।

खुलासा ये हे के हज़रत फ़ारूके आज़म रदि अल्लाह अन्हु के इस जवाब ने ये बतला दिया के यहूद व नसारा की तरह हमारी ईदैन तारीख़ी वाक़िआत के ताबे नहि। के जिस तारीख में कोई अहम् वाक़िअ पेश आ गया उसको ईद या जश्न बना दे। जैसा के पहले की जाहिलीयत की रसम थी। और आजकल की नयी जाहिलीयत ने तो इसको बहोत फैला दिया हे। यहाँ तक के दूसरी क़ौमों की नकल करके मुसलमान भी इसमें मुब्तला होने लगे।

इसाइयों ने हज़रत इसा अलैहिस्सलाम कि यवमे पैदाइश की ईद इ मिलाद मनायी। उनको देख कर कुछ मुस्लमानो ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश पर ईद मीलादुन्नबी के नाम की एक ईद बनायी। उसी रोज़ बाज़ारों में जुलूस निकालने और उसमे तरह तरह की खुराफ़ात को और रात में चिराग- लाइटिंग्स को इबादत समज कर करने लगे। जिस की कोई असल सहाबा रदि। व ताबीइन

रह। और असलाफे उम्मत के अमल में नहीं मिलती । और हक़ीक़त ये है के ये दिन मनाने का तरीका उन क़ौमों में तो चल सकता हे के जो बा कमाल अफ़राद और उनके हैरत अंगेज़ कारनामों के लिहाज़ से मुफलिस और गरीब हे। दो चार शख्सियतें कुल क़ौम में इस क़ाबिल होती हे। और उनके भी कुछ मख़सूस काम ऐसे होते हे। जिनकी यादगार मनाने को क़ौमी फ़ख्र समजते हे।

इस्लाम में ये दिन मनाने की रसम चले तो एक लाख चोबीस हज़ार से जाइद तो अम्बिया हे।। और उतने ही सहाबा हे। और अवलिया इ किराम बे शुमार हे। जिन में से हर एक की न सिर्फ पैदाइश बल्कि उनके हैरत अंगेज़ कारनामों की लम्बी फ़हरिस्त हे जिन के दिन मनाने चाहिये। पता चला के इस्लाम में दिन मनाने की रसम सहीह नहीं हे।

लिहाज़ा अभी जश्ने मे'अराजुन नबी मनाने भी इस आयत और उसूल से बिद'अत साबित हुवा ।

🔰 **सुरह ए माइदाह।** ⭕ **आयात - ६।**

📗 **तफ़्सीर ए मारीफुल कुरान से माखूज।**

واللہ اعلم بالصواب

♦ मीलाद की शुरुआत।

अस्सवाल

➢ रस्मी मीलाद का सिलसिला कब और कहाँ से शुरू हुवा ?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

महफिले मीलाद छठी (६) सदी गुजरने के बाद सुलतान अरबल के ज़माने से शरू हुवा है, जैसा के तारीख इब्ने खलकान में है, और उसी वक़्त से उलेमा उस की तरदीद (मुखालिफत) करते आ रहे है।

📗 **फतावा महमूदिया: ३/८७।**

📘 **किताबंनवाज़िल १/५५१।**

बरेलवी हज़रत के हकीम उल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी फ़रमाते है के:

" इमाम सखावी रह. ने फरमाया के मिलाद शरीफ तीनो ज़मानो में किसी ने नहीं किया, बाद में इज़ाद हुवा।"

📙 **जा अल हक़ : सफा २३६।**

बरेलवी मौलवी फैज़ अहमद ओवैसी लिखते है के:

" वाक़ई सलफ-ओ-सालेहीन ने यह अमल नहीं किया।'

📗 **ग़ौसुल इबाद : सफा ५०।**

बरेलवी अल्लामा ग़ुलाम रसूल सईदी फ़रमाते है के:

“महफ़िल ए मिलाद की हैय्यत ए इस्तेमाई हर चंद के बिद्दअत है।’

शरह मुस्लिम : जिल्द ३ : सफा १८५।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पीर के दिन रोज़ा रखते थे और फ़रमाते थे के मेरी विलादत पीर के रोज़ हुई, इसलिये में रोज़ा रखता हुं। (मिश्कात)

सुन्नत तरीक़े पर विलादत मनाना हो तो रोज़ा रखो।

अब जिस दिन विलादत हुई उस दिन ईद मनाना कैसे जाइज़ होगा ? ईद के दिन रोज़ा रखना हराम है, प्यारे आक़ा ने उस दिन रोज़ा रख कर ईद का तसव्वुर की जड़ ही काट दी। उस दिन मनाने का तसव्वुर और हालात उस वक़्त भी मव्जूद थे, ईसाई-नसारा इसा अलैहिससलाम की पैदाइश मनाते थे, फिर भी न हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस दिन को ईद मनायी, ना सहाबा ए किराम रदि अल्लाहु अन्हुम ने, जीनकी इत्तिबा का हम को हुक्म है, और हम अपने को अहले सुन्नत वल जमात यानि सहाबा की जमात की पेरवी करने वाला कहते है, न ताबीइन ने, न तब'य ताबिन ने, ना चारों इमाम ने, ना चारों सिलसिले के किसी बुज़ुर्गों ने।

लिहाज़ा ये ईद मनाना ग़ैरों का तरीका और बिदअत ठहरा, गैर भी राम जयंति, किशन जयंती वगैरह मनाते है, उस दिन केक काटना, बर्थडे मनाना बिला शुबह यहूदी और ईसाइयों का तरीका है, जिस पर सख्त वईद है, लिहाज़ा इस से बचना चाहिए।

والله اعلم بالصواب

♦ रबी-उल-अव्वल में और मुहर्रम का बयान रखने और सुनने का हुक्म।

अस्सवाल

➢ हमारे यहाँ बहुत सी जगहो पर मुहर्रम के महीने में और रबी-उल-अव्वल में उलमा-ए-देवबन्द के भी बयान होते है, तो हम क्या करे ?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

रबी-उल-अव्वल में १२ दिन और मुहर्रम के १० दिन मिलाद खानी को लाजिम कर लेना दुरुस्त नहीं, और क़याम करना तो बहर हाल बे-असल है। अगर इन अय्याम में मज्लिस मुनअक़िद करना मुफ़ीद हो तो मौलूद खानी के बजाये मोअतबर उलेमा से वाअज़ कराया जाये जो तौहीदो सुन्नत का दर्स दे।

(हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद किफ़ायतुल्लाह देहल्वी रहमतुल्लाहीअलयह "मौलूद मुरव्वजा" का हुक्म)

👉 हमारे उलेमा ने इस महीने में कुछ शराइत के साथ बयानात की गुंजाईश दी है,

मसलान सिर्फ दसवी मुहर्रम को न हो, शियों की तरह सिर्फ ज़िक्र ए शूहदा, हर किसम की सहीह गलत रिवायात के ज़रिये न हो, तारीख के एहतेमाम के साथ मसलन १ ही से शुरू और १० तक लाज़िमन करे ऐसा न हो, बल्के माहे मुहर्रम में लोगो के इज्तिमा का फ़ायदा उठाते हुवे बगैर तायीन-ए- तारीख अय्याम के और सहीह रिआयत की रौशनी में ज़िक्र-ए-शहादत के अलावह इस्लाही मज़ामीन पर बयानात किये जाए, ताके अवाम गलत लोगो के पास बेठने और खुराफ़ात में पडने के बजाये सहीह जगह बैठे और खुराफ़ात से भी बचे रहे।

📗 **मरगुबुल फ़तावा । कताबुंनवाज़िल १/५१२ से मअख़ूज़।**

والله اعلم بالصواب

♦ मीलाद न मानाने वाले बरेलवी उलमा।

अस्सवाल

➢ मीलाद उन नबी क्यों नहीं मनाना चाहिए (बरेलवी उलमा की ज़ुबानी)।

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

हम मिलाद-उन-नबी क्यों नहीं मानते (उलमा ए बरेलवी की ज़ुबानी)

उलमा ए बरेलविया को बार-बार ये बात कही जाती है कि मिलाद के मनाने और उसके जुलूससे इस्लाम की इब्तेदायी 500 साल खाली रही है।

लेकिन ब-जाए समजाने के, ये हज़रत उल्टा उलमा ए अहले सुन्नत वल जमात को बुरा - भला कहते हैं।

पर जो बात उलमा ए अहले सुन्नतने कही है, वही बरेलवी उलमा ने भी कही गई है।

पस, अब बात हमारी है, अलबत्ता ज़ुबान उनकी है।

बरेलवी हजरत के हकीमुल उम्मत, मुफ्ती अहमद यार खान नईमी फरमाते हैं के :

" इमाम सखावी रह. ने फरमाया के मिलाद शरीफ तीनो जमानो में किसी ने नहीं मनाया, बाद में इजाद हुआ।"

जाल अल हक़ : सफ़ा २३६।

बरेलवी मौलवी फ़ैज़ अहमद ओवेसी लिखते हैं के : " वाकई सलफ-ओ-सालेहीन ने ये अमल नहीं किया।'

औसुल इबादः सफ़ा ५०।

एक और मक़ाम पर कहते हैं के :

'चुनके सलफ़-ओ-सालेहीन के ज़माने में इस तारीख़ का दस्तूर नहीं था।'

गौसुल इबादः सफ़ा ५१।

बरेलवी आलिम " अल्लामा गुलाम रसूल सईदी फरमाते हैं के : 'महफिल ए मिलाद की हैय्यत ए इजतीमायी हर अेएतेबार से बिद्दत है।'

शरह मुस्लिमः जिल्द 3: सफ़ा १८५।

आगे फरमाते हैं के :

खुलासा ये है कि " ईद ए मिलाद " बिदअत (नया काम) है, लेकिन अच्छाइयों और बुराइयो पर मुश्तमिल है।"

शरह मुस्लिमः जिल्द 7: सफ़ा १०२६।

बरेलवी शेखुल इस्लाम, " ताहिर उल कादरी " की गवाहीः

सरकार ए दो-आलम सल्ललललाहू अलयही वसल्लम अपने खालिके हक़ीक़ी से जा-मीले, तो सहाबा ए किराम रदीयल्लाहु तआला पर गम का एक बड़ा पहाड़ टूट पड़ा था।

इस लीये जब इनकी जिंदगी में १२ रब्बी – उल – अव्वलका दिन आता, तो विसाल के सदमे तले विलादत की खुशी दब जाती और जुदाई का ग़म फिर से ताज़ा हो जाता।

आका ए दो जहाँ सल्लललाहू अलयही वसल्लमकि जिंदगीकी यादोंके जलवे में 12 रब्बी उल अव्वल का दिन आता तो खुशी व गम की कैफियत मिल जाती और सहाबा किराम रदीयल्लाहु तआला अनहु पर विसाल ए मेहबूब सल्लललाहू अलयही वसल्लमको याद करके सदमा झदा दिलो के साथ ख़ुशी का इजहार न कर सकते थे।

मिलाद उन नबी सल्लललाहू अलयही वसल्लम: सफा ४५४।

तमाम बरेलवी उलमा के इरशादात से मालूम हुवा के सहाबा किराम रदीयल्लाहु तआला अनहु और सलफ़ – ओ - सालेहीन और तीनो ज़मानोमें मिलादुन नबी मनाने का रिवाज नहीं था।

मझीद गुलाम रसूल सईदी ने मिलादुन नबीके जुलूस के हालात यूं बयान करते हैं के

“ बाज़ शहरो में ईद ए मिलादुन नबीके जुलूस के तकद्दुस को बिल्कुल पा'माल कर दिया गया है, जुलूस तंग रस्तोसे गुज़रता है और मकानों की खिड़कियां या बालकनियोंसे नव-जवां लडकिया, औरतें जुलूस में शरीक होनेवालों पर फूल वगैरह डालती है (शायद सवाब की नियत से, अल इयाज़ुबिल्लाह)

औबाश-कामिने नौ-जवां फ़हाश-गंदी हरकतें करते हैं।

जुलूस में मुख्तलिफ गाडियों पर फिल्मी गानोंकी रिकॉर्डिंग होती है और नौजवान लड़के फिल्मी गानोंकी धुनों पर नाचते हैं और नमाज के औकातमें जुलूस चलता रहता है, मस्जिद के आगे से गुज़ारता है और नमाज का कोई अहतेमाम नहीं किया जाता .

इस क़िस्म का जुलूस मिलाद उन नबी के तकद्दुस-इज़्ज़त पर बद-नुमा दाग है, उनकी अगर इस्लाह न हो सके, **तो उनको फ़ौरन बंद करना चाहिए।**

क्योंकि एक अम्र (अमल) मुस्तहसन के नाम पर मोहरमात के इर्तेकाब की शरीयत में कोई असल नहीं है।

शरह मुस्लिम: जिल्द 3: सफ़ा १७०।

एक और मौलवी साहब, अब्दुल गफूर शर्कीपुरी फरमाते हैं के "अगर मुस्तहब फ़र्ज़ के लिए रुकावत बने, तो मुस्तहब का छोड़ना ज़रूरी है।"

नमाज़ी के पास बा-आवाज़ ज़िक्र करना जायज़ है या नहीं: सफ़ा १७६।

आखिर में अहमद यार खान नईमी साहब यू लिखते हैं के

"इस आयत से चांद मसअले मालूम होते हैं, एक ये के अगर ग़ैर ज़रूरी इबादत फ़सादका ज़रिया बन-जाए, जो हम से मिट न सके, तो इसको छोड़ - दिया जाए।"

📗 **तफ़सीर ए नुरूल इरफ़ान, हाशिया : सफ़ा २२४।**

खुलासा ए कलाम:

हमारे संजीदा बरेलवी हज़रत से गुजारिश है के : वो बरेलवी अल्लामा, गुलाम रसूल सईदी साहब की इबारत पर गौर करे।

क्या आया वो तमाम बातें जो सईदी साहब ने ज़िक्र किया है, आज कल के जुलूस में नहीं हो रही है ?

क्या वाकाई नमाज के औकात में जुलूसको रोक-कर नमाज अदा की जाती है?

क्या वाकाई 12 रब्बी-उल-अव्वल के दिन मस्जिदो में मुसल्लियों की ता'अदाद में भारी इज़ाफ़ा होता है?

क्या मिलाद के जुलूस में नौ-जवां बे-हुदा हरकतें नहीं करते?

हर आंखे रखने वाला शक्स देख रहा है कि आज मिलाद के जुलूस के नाम पर क्या हो रहा है?

पस, हमारी यही गुजारिश है के

(१) मिलाद के नाम पर करोड़ो के पैसे खर्च करना।

(२) नमाज़े चोर-ना और इसमे

(३) नौ-जवानों का बे-हुदा काम करना,

(४) नाच-ना गाना।

(५) लोगो को तकलीफ देना.

(६) रात रात भर और इसी तरह रोड पर स्पीकर का फुल साउंड के साथ चालू रहना।

(७) मोटर साइकिल के साइलेंसर की आवाज बड़ाकर तैज़ चलाना।

और

ग़ैर मुस्लिमों को देख-कर नारे लगाना, इसे कौनसा दीनी फ़रीज़ा अदा हो रहा है, इसे कैसे सच्चा आशिक ए रसूल होना साबित हो रहा है?

हम किसी पर तंज नहीं मार रहे हैं, बलके आज के मिलाद के नाम पर जुलूस को देख-कर हर साहेब ए बसीरत शक्स (जिसको अल्लाह ताला ने दिल की आंखे दी हो, जो वाकाई में हुजूर स.अ.व. का सच-चा उम्मती हो, जिसने मिलाद) के जुलूस में होने वाले बड़ी बड़ी गलतियों को महसूस किया है, वो) यहीं कहेंगे के

'आज के बे-हयाई के दौर में मिलाद के नाम पर जुलूस निकालना और इसको मनानेकी कोई गुंजाइश नहीं है ।

والله اعلم بالصواب

♦ अबू लहब ने भी मिलाद-ए-मुस्तफा सल्ललल्लाहू अलयाही वसल्लम मनाया ?

अस्सवाल

हज़रत शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहिमहुल्लाहि तआला ने "मा सबता मिनस सुन्ना" में फरमाया है के......

अबू लहब की लौंडी थी, जिसका नाम सोबिया था, उसने सरवर-ए-दो आलम सल्लल लाहू अलयाही वसल्लम की पैदाइश पर अबू लहबको खबर दी थी, तो आप सल्लल लाहू अलयही वसल्लम की पैदाइशकी खबर सुन्ने पर अबू लहबने सोबिया को आज़ाद कर दिया था.

तो अबू लहबके मरने के बाद किसीने उसे ख़वाब में देखा, पूछा के "कहो ? क्या हाल है"

वो बोला को,

" आग मैं हूं अलबत्ता इतना करम हय के हर पीर की रात मुझ पर तख़्फिफ करदी जाती है, और इशारेसे बताया के अपनी दो उंगलियों से पानी चूसता हूं, और ये इनायत मुझ पर इस वजह से है

कि मुझे सोबियाने भतीजेकी पैदाइशकी खबर दी थी, तो इस बशारतकी खुशी में मैंने उसे दो उंगलीयों के इशारे से आजाद कर दिया था। और फिर उसने उसे दूध पिलाया था'।

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

अल्लाह तआला का इरशाद है,

فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً

१। ख्वाब में किस ने देखा ये हदीसमें नहीं बताया गया है इसलिए ये रिवायत मजहूल है, जईफ है।

२। काफिरकी कोई बात बेदारी की हुज्जत नहीं, तो ख्वाबकी बात हुज्जते शरीयत केसे हो सकती है!

३। ये रिवायतको मान भी लिया जाए तो जवाब ये है कि इस से तो हुज़ूर सल्लाहु अलयही वसल्लमकी विलादत पर बाँदी आज़ाद करनेकी फ़ज़ीलत साबित होती है।

📗 **सहिह बुखारी, वॉल्यूम। १ , पृष्ठ १५३, हदीस संख्या ५१०१, किताबुन निकाह।**

आज बाँदीका दौर नहीं है, तो क़ैदियोंको आज़ाद कराओ। लाइट में और बेनरोंमे पेसे फ़ुज़ूल ख़र्च करनेके बजाएं बेगुनाह मुसलमान क़ैदियों को आज़ाद करनेके लिए केश लड़ो।

واللہ اعلم بالصواب

♦ बरेलवियों के मिलाद उन नबी के मुतालिक दलील और उनका रद।

★→दलिल नंबर-१

कुरान ए करैम से दलील-

"अल्लाह के फ़ज़ल और रहमत पर ख़ुशियाँ मनाओ"

सूरहः यूनुस आयत:५८।

★→अल-जवाब

अगर इस आयत ए करीमा की तफ़सीर कुछ और की जाए तो बरेलवियो की क़ियास बातिल होगी... आए देखते हैं इस आयत की तफ़सीर जम्हूर मुफ़स्सिरीन क्या करते हैं...

★→ इस आयत में फ़ज़ल से मुराद इस्लाम है और रहमत से मुराद क़ुरआने करीम है..

📗 **झाद उल मेसर लिल इब्न जौझी जिल्द १, सफ़ा ३१।**

📗 **दुर्रे मंसूर लिल सुयुति जिल्द ४, सफा ३६८।**

📗 **तफ़सीर तबरी जिल्द ७, सफ़ा १६१।**

📗 **फतहुल कदिर लिल शौकानी जिल्द २, सफा ५६।**

📗 **तफसीर जलालैन सफा १७५।**

📗 **तफ़सीर इब्न कसीर जिल्द २, सफ़ा ३८२।**

📗 **तफ़सीर राज़ी जिल्द ९, सफ़ा १२४।**

★→ ये तफ़सीर बरेलवी आलिमने भी की है " नईमुद्दीन मुरादाबादी " अपनी किताब खझीनुल इरफ़ान सफ़ा ३८७ पर...

★→ चुनान्चे ये दलील सिरे से बरेलवियों की बनती है ही नहीं, अगर तफ़सीर के नेहज़ से देखा जाए तो और तफ़सीर ए क़ुरान हुज्जत होती है, ये बात बरेलवी लोगो को भी पता है, मगर यहाँ वो पेश करदा आयत की तफ़सीर पेश क्यों नहीं करते!!!

★→दलिल नंबर-२।

जब आका सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत करके मदीना शरीफ आए, तो लोगोंने खूब जश्न मनाया

नोजवां लड़के अपनी चाटों पर चार कर और गुलाम, खुद्दाम रस्तो में फिरते थे.. और नाराए रिसालत लगाते और कहते या रसूलल्लाह...

📗 **सहीह मुस्लिम जिल्द २, सफ़ा ४१९।**

★→अल-जवाब

अव्वल तो ये के ये हिजरत का जश्न था, ना के विलायत का.... जो बरेलवियोंने अपना दल बनाया हुआ है...

★→ दूजा ये के ऐसी दलील है ही नहीं आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमने या सहाबाने मिलाद का हुकुम दिया ही नहीं है.

★→ बिदअत हर वो नया काम है, जिसको दीन समझ कर और लाज़िम जानते हुए किया जाए जो नबी-ए-पाक और सहाबा से साबित न हो वो बिदत है..

📗 **फ़तहुल बरी शरह साहिह बुखारी ५/३२१।**

📗 **सहीह बुखारी १/३७१।**

📗 **तफ़सीर इब्ने कासिर ४/१५६।**

★→दलिल नंबर-२।

हुज़ूर अलेहिस्सलाम हर पीर (सोमवार) को रोज़ा रख कर अपना मिलाद मनाते थे.

📗 **सहीह मुस्लिम जिल्द २, सफ़ा ८१९। हदीस नं ११६२।**

★→ अल-जवाब

बलके ये हदीस अधूरी नक़ल की गई है, इसके आगे ये भी है के :.........

"और इस दिन मुझ पर क़ुरान ए करीम नाज़िल हुआ"

चुनान्चे कुराने करीम नाज़िल होने की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमने रोज़ा रखा था...

लिहाजा बरेलवियों को भी चाहिए के हर हफ्ता पीरके दिन रोजा राखे जैसे आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम रखते थे, ना के १२ रब्बीउल अव्वलके दिन को मकसूस थेहराना और उस दिन तो बरेलवी हज़रात ख़ूब मस्ती करते हैं !

والله اعلم بالصواب

♦ मिलाद व मवलूद पर तमाम दलीलों का जवाब।

अस्सवाल

➢ किन हालात में दूसरा निकाह करना चाहिए ?

अलजवाब

حامدا ومصليا ومسلما

अल्लाह तआला का इरशाद है,

فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً

" जिक्रे मिलाद व मवलूद का " क्या मतलब होता है " विलादत शरीफ पैदाइश का बयान, " " तज़किराह " इस से कोन मना करता है?

👉 ये बाइसे खैर व अजर है।

👉 हम भी पूरे साल सीरत की किताब पढ़ने में, तबलीग वाले पहली सिफ्ट ईमान जिस का दूसरा हिसा मुहम्मदुर रसूलल्लाह है हुज़ूर صلى الله عليه وسلم की मुहब्बत और इत्तिबबा है हम उसमेंभी करते हैं.

🚫 इन तमाम दलीलोंमें ये बात कहां के

👉 हर साल दिन की तैयारी के साथ करते हैं।

👉 या खड़े होकर ही मीलद पढ़ते थे ?

👉 क्या आप दिवालीकी तरह लाइटिंग करते थे ?

👉 जुलूस निकलेते थे?

👉 उस दीनको ईद की तरह मनाते थे ?

👉 उस दीन रोजा रखते थे ?

👉 ईद को तो रोज़ा रखना हराम है।

💎 हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद मदीना या कुफ़ामें पहली बार तशरीफ़ लाए थे उस वक़्तख़ुशी मनई थी ? इस्तिक़बाल के लिए मजमा निकला था ?

🚫 लेकिन हमें वक़्त रबीउल अव्वल का महीना नहीं था।

🚫 और फिर हर साल इसी तरह उस दिन खुशी मनाथे, ये साबित करो.

🤔 हमें भी बताओ कौन से शहर में?

कोन से वक्त?

कोनसी जगह ?

सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमकी आमद है ?

💐 हम फूलों को बिछा देंगे, पूरी दुनिया के लोग उस शहर में जमा हो जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है

🎉 जनम दिन मनाना गैरों का तारीका है

👉 हमें दिन केक काटना, मोमबत्तियां बुझाना साबित करो?

👉 ये सब काम सवाब और दीन समझ कर किए जाते हैं, इसलीए बिदअत है, और बिदअतको बिदाती गुनाह नहीं समझते, इसलीए तौबा की तौफीक नहीं होगी

🚫 इस दीन ईद नहीं मनई तो ये सवाल हरगिज नहीं होगा के तुमने इस तरह खुशियां क्यों नहीं मनाई, लेकिन अगर ये बिदत निकली तो जरूर सवाल होगा ये बिदत क्यों की?

👉 वफ़ात का दिन १२ रबी-उल-अव्वल बिलकुल तय था?

👉 विलादत का दिन मौलाना अहमद रज़ा के फतवा रज़विया की तकवीमी तहकीक के मुताबिक ९ रबीउल अव्वल था।

👺 तो इबलीस की तरह वफ़ात के दिन ख़ुशियाँ क्यों मनाई?

واللہ اعلم بالصواب

♦ मीलाद् की नियाज़ खाने का हुक्म।

अस्सवाल

➢ ईद ए मीलादुननबी ﷺ की नियाज़ खाना कौन सी सूरत में जायज़ और कौन सी सूरत में नाजायज़ है ?

अलजवाब

حامدا و مصلیا و مسلما

ईद ए मीलादुननबी ﷺ की ताईन १२ ही तारिख तय करने के साथ खाना पकाना (लोगों को जमा करना) वग़ैरह गुमराह करने वाली बिदअत है, उस से बचना ज़रूरी है, और अगर खाने में नियत इसाले सवाब की है तो खाना मुबाह (न सवाब, न गुनाह) और सदक़ह है।

ओर अगर अकाबीरीन के नाम पर है (उन को राज़ी करने की, उन से क़रीब होने की नियत हो, अल्लाह के नाम पर न हुवा)

गैरुल्लाह के नाम पर ज़बह करने की सूरत में दाखिल होने की वजह से हराम है, और ऐसे अक़ाइद फ़ासिद और कुफ्र के बाइस है।

जाईज़ सूरत 👉

इसाले सवाब अगर दिन और खास खाने को तय किये बगैर सिर्फ अल्लाह को राज़ी करने के लिए हो तो मुस्तहब है, इसाले सवाब का खाना सिर्फ गरीब खाये, मालदार को खाना मना है।

📘 **मलफ़ूज़ात जिल्द ३ से माखूज़ (मौलाना अहमद रज़ा साहब बरेलवी)।**

अगर दिन और खाने को खास करने के साथ हो तो बिदअत है।

📗 **फतवा रशीदिया /१३८।**

📘 **फ़तवा महमूदिया १५/४२९।**

ऐसे मौक़ों में इस तरह के खाने पकाने का शरीअत में कोई सुबुत नही, लिहाज़ा ये काम नाजाइज़ और बिदअत है, अगर महज़ रसम के तोर पर पकाया जाए, सवाब का अक़ीदा न हो तो भी उसमें बिदअत की ताईद-होंसला अफजाई और रिवाज देना है, लिहाज़ा उस से बचना लाज़िम है, उसी बिना

पर खाना क़ुबूल करने से भी बचना चहिये, इसके बावुजूद ये हराम नहीं है।

📗 **अहसनुल फ़तवा १/३७५।**

(शैखुल हदीस मौलाना अहमद राहील सब दा. ब. मद्रसह कंजे मरगूब पाटन)।

जवाज़ पर अकाबीरीन इबरत से दलील पकड़ने का जवाब

शाह अब्दुर रहीम दहेलवी रहमतुल्लाहि अलय्हि फरमाते है के : मे विलादत के दिनों में हुज़ूर ﷺ को इसाले सवाब पहोंचने की निय्यत से खाना पकता था। एक बार ऐसा हुवा के मेरे पास कुछ न था के में खाना पकाता, भुने हुवे चनो के अलवाह, तो मेने उसी को लोगों में तक़सीम कर दिया।

इन जैसे बुज़ुर्गों की इबारतों में न विलादत की हद से ज़यादा रौशनी का तज़किराह है, न खाने के लिए लोगों का जमा करने का ज़िक्र (न १२ तारिख का ज़िक्र है, बलके लिखा है मवलूद यानि विलादत के दिनों में, ना जबरदस्ती का चंदा है, न शरीक न होने वालों को हक़ीर समझना है, न मंडप था, न रास्ता बांध कर के आने जाने वालों को तकलीफ पहुंचना है) लिहाज़ा इस से दलील पकड़ना सहीह नही।

📙 **फतावा राशिदियह १३७।**

والله اعلم بالصواب

♦ बाल मुबारक।

अस्सवाल

➢ बाल मुबारक के देखने का क्या हुक्म है ?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

हदीस शरीफ से साबित है के हुज़ुर ﷺ ने अपने बाल मुबारक सहाबा रदीअल्लाहु तआला अन्हुमा को तक़सीम फरमाए थे।

फतावा इब्ने तैमियाह मे है के हुज़ुर ﷺ ने अपने बाल मुबारक मुंडवा कर आधे सर के बाल अबु तल्हा रदी अल्लाहु तआला अन्हु को दिये और आधे लोगो के दरमियान तक़सीम फरमा दिये।

अगर किसी के पास हो तो ताज्जुब की बात नहीं।

अगर उस की सहीह और क़ाबिले एतिमाद सनद (पुरी चेईन हो के हम तक किस ज़रीये पहोंचा) हो तो उस की ताज़ीम-ज़्यारत करना बहोत बडी खुश नसीबी है।

अगर सनद ना हो और बनावटी होने का भी यक़ीन ना हो तो खामोशि इख्तियार कि जाये, ना उसकी तसदीक़ करे/सच्चा समजे, ना तकज़ीब/झुठलाये, ना ताज़ीम करे, ना तोहीन करे।

बाल मुबारक और दुसरे नबवी तबर्रुकात खैरो-बरकात को वाजिब करने वाले है, और उसकी ज़्यारत से अज्रो-सवाब मिलता है।

उसे देखने मे मर्दो और औरतो का मिलाप ना हो।

हज़रत आईशाह रद्दी अल्लाहु तआला अन्हा अपने ज़माने की औरतो के मुताल्लिक़ फरमाती है के रसुल्लाह ﷺ इस ज़माने की औरतो को देखते तो उन को मस्जीद मे जाने से मना फरमाते।

लिहाज़ा औरतो को जमा ना किया जाये।

तबर्रुकाते मुबारक को हमारे गुनाहगार हाथ ना लगाये जाये। सिर्फ ज़ियारत पर बस किया जाये।

तबर्रुकात से बरकत हासिल करने का सहीह और जाइज़ तरीक़ा ये है के खास तारीख तय किये बगैर लोगो को जमा करने का एहतिमाम किये बगैर जब दिल चाहे ज़ियारत करे कराये।

सहाबा के ज़माने मे दस्तूर था के किसी नज़र वगैरह की तकलीफ़ हो जाती तो उम्मुल मोमीनीन हज़रत उम्मे सलमाह रदीअल्लाहु तआला अन्हा के पास पानी का प्याला भेज दिया जाता, आप के पास बाल मुबारक थे। उनको चांदी की नल्की मे महेफूज़ रखा था, पानी मे उस नल्की डाल देते थे और वो पानी मरीज़ को पिलाया जाता था।

📗 **क़ुस्तलानि शरहे बुखारी जि.८/ सफा ३८२।**

हज़रत अस्मा रदीअल्लाहु अन्हा के पास हुज़ुर ﷺ का कुर्ता मुबारक था, फरमाती है के हम उसे पानी मे धोकर वो पानी अपने बिमारों को बगर्ज़े शिफा मरीज़ को पिला दिया करते है।

📗 **सहीह मुस्लिम २/१९०।**

📗 **फतावा रहीमियह जदीद बाब-उल-अंबिया जिल्द ३/ सफा ४० से ४२ का खुलासा उर्दु की आसानी के साथ।**

हम एहले सुन्नत वल जमात तबर्रुकात से बरकत हासिल होने को मानते है। लेकिन उसे सब कुछ ना समझे। नजात तो आमाल से होगी, बिला आमाल व इत्तिबा ए नबी ﷺ सिर्फ ज़ाहिरी मुहब्बत का ढोंग और मुहब्बत के दावे काफी नहीं।

गैर-मुक़ल्लिद नाम के एहले हदीस असल वहाबी तबर्रुकात से बरकत हासिल करने को नहीं मानते।

अल्लाह जल्ले-शानहु हमे सच्ची और कामिल मुहब्बतो ईस्क़े रसुल सल्ललललाहू अलयही वसल्लम नसीब फरमाये।

आमीन।

والله اعلم بالصواب

♦ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की विलादत की सहीह तारिख।

अस्सवाल

➢ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलय्हि व आलिहि वसल्लम की विलादत और वफ़ात की उर्दु और अंग्रेजी तारिख क्या है ?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

नबियों के इमाम, बा'इस ए तख़लीक़ ए का'यनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम की यौमे विलादत याने पैदा'ईश ए मुबारक का दिन "पीर" याने सोमवार है।

ओर तारिख ए विलादत ए शरीफ़ा याने पैदाइश की तारिख में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल किताबों में मिलते है।

मगर मुहक़्क़िक़ीन की एक जमात ने रबी'ऊल अव्वल की ८ तारिख को और दूसरी जमात ने ९ तारिख को सहीह क़रार दिया है।

फ़िरक़ाह ए रज़विय्यह (बेरेल्वियत/रज़ाख़ानीयत) के बानी ओ पेश्वा अहमद रजाखान साहब बेरेलवी ने भी मुहक़्क़िक़ीन की पहली जमात की मुआफ़क़ात करते हुवे फतावा रिज़विया जिल्द २६ में ८ तारिख को सहीह माना है।

ओर अंग्रेजी ऐतिबार से २० अप्रैल ५७१ ईस्वी को सुबह सादिक़ के वक़्त ४:२० सुबह को हुवि थी।

📘 रवज़तुल ओफ़ माहिरीन फलाकियत अल्लामा सुहैली रहमतुल्लाही अलयही। १/२८२।

📕 अर रहीक़ुल मखतूम।

ओर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यौम ए वफ़ात भी पीर याने सोमवार का दिन है।

ओर तारीख ए वफ़ात मष्'हूर क़ौल के मुताबिक रबी उल अव्वल की १२वी तारिख है।

इसी लिए अवाम में यह तारिख १२ वफ़ात से मष्'हूर है।

अगरचे यह मष्'हूर क़ौल भी दुरुस्त नहीं है।

विलादत का १२ रबीउल अव्वल मशहूर कौल दुरुस्त नहि है, क्यूँ के पीर का दिन किसी भी तरह फिट नहीं होता, गोया जो लोग १२ रबीउल अव्वल को विलादत समझ कर खुशिया मनाते हैं हकीकत में शैतान उनसे वफ़ात पर खुशिया मनवा रहा है,

खुशिया न माનाने वालों को इब्लीस केहने वाले खुद ही इब्लीस बन रहे है,

क्यूँ के वफ़ात के दिन इब्लीस और इब्लीस की पैरवी करने वालों ने खुशियां मनाई थी।

واللہ اعلم بالصواب

♦ ईद मिलादुननबी की हकीकत।

अस्सवाल

➢ ईद मिलादुननबी क्यों मनाई जाती है और इसकी हकीकत क्या है?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

मिलाद से मुराद है पैदाइश का दिन और ईद मिलादुननबी का मतलब है नबी-ए-करीम ﷺ की पैदाइश के दिन ईद मानना।

ईद मिलादुननबी मनाने वालों का कहना है के 12 रबीउल अव्वल को मुहम्मद ﷺ की विलादत हुई थी और उनकी विलादत का दिन ख़ुशी का दिन है इसलिए हर साल इस दिन को बड़े जोशो-खरोश से मनाते हैं , नए कपड़े पहने जाते हैं, घरों में मिठाइयां और पकवान बनाये जाते हैं, और एक जुलूस भी निकाला जाता है जिसमे माइक और लाउडस्पीकर पर नारे लगाते हुए, शोर शराबों के बीच ये खुशियां मनाते हैं.

ये कहाँ तक सही है और क़ुरान और हदीस में इसके बारे में क्या हुक्म है,

ईद मिलादुन नबी को मनाने का सुबूत न तो किसी हदीस में मिलता है और न ही क़ुरआन की किसी आयत में ईद मिलादुन नबी का ज़िक्र है, तो फिर ये वुजूद में कहाँ से और कैसे आया?

तारिख की किताबों के हवाले से पता ये चला के इराक़ के शहर मौसूल का इलाक़ा इरबिल का बादशाह "मलिक मुज़फ्फर अबु-सईद" ने नबी-ए-करीम की वफ़ात के ६०० साल बाद सबसे पहले इस्लाम में इस नयी खुराफात को जनम दिया और रबीउल अव्वल के महीने में उसके हुक्म से एक महफ़िल सजाई गयी जिसमें दस्तरख्वान सजाया गया और सूफियों को बुलाया गया फिर ढोल-तमाशे और नाचना-गाना हुआ जिसे ईद मिलादुन नबी का नाम दिया गया.।

📗 **अल-बिदायह वाल निहाया, जिल्द १३,सफहा १६०, इबने कसीर।**

इस बादशाह के बारे में मोवर्रिख (इतिहासकार) ने लिखा है के इसे दीन की समझ नहीं थी और ये फ़ुज़ूल खर्च इंसान था

📗 **अनवारे सातिया, सफहा २६७।**

उसके पहले तक क़ुरान हदीस से साबित सिर्फ दो ईद ही थी मगर कुछ गुमराह लोगों की वजह से ये तीसरी ईद का आग़ाज़ हुआ जिसकी कोई दलील मौजूद नहीं है।

मुहम्मद स० अलैह० फरमाते हैं "" दीन के अंदर नयी नयी चीज़ें दाखिल करने से बाज़ रहो, बिला शुबहा हर नयी चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है." ।

📗 **अबु'दाऊद किताब अल सुंनह ७०६४।**

इस तीसरी ईद को मनाने की शरई हकीकत पे ग़ौर करें तो ईद मिलादुन नबी को कभी भी रसूलल्लाह के ज़माने हयात में नहीं मनाया गया और न ही कभी आप ﷺ ने इसे मनाने का हुक्म दिया।

इस तीसरी ईद को सहाबए कराम में से किसी ने नहीं मनाया और न ही कभी इस ईद के वजूद की तस्दीक की।

ताबईन और तब ताबईन के दौर में भी कभी कहीं इस ईद का ज़िक्र नहीं मिलता और न ही उस ज़माने में भी किसी ने इस ईद को मनाया था।

इन तमाम सुबूतों से यही साबित होता है के इस्लाम में दो ईदों (ईद उल-फ़ित्र और ईद उल-अज़हा) के अलावा कोई तीसरी ईद नहीं है, ये खुराफाती दिमाग़ की उपज है जो के सरासर बिदअत है।

रसूलल्लाह स० अलैह० ने फ़रमाया "सबसे बेहतरीन अमर (अमल करने वाली) अल्लाह की किताब है और सबसे बेहतर तरीका

मुहम्मद स० अलैह० का तरीका है, और सबसे बदतरीन काम दीन में नयी नयी बातें पैदा करना है, और हर नयी बात गुमराही है "

📗 **इबने माजा जिल्द 1 हदीस ४५।**

१२ रबीउल अव्वल का दिन हज़रत मुहम्मद ﷺ के दौरे हयात में 63 दफा आया था, खुलफ़ा-ए-राशेदीन में

हज़रते अबु बकर रज़ि० की खिलाफत में 2 दफा।

हज़रते उमर रज़ि० की खिलाफत में 10 दफा।

हज़रते उस्मान रज़ि० की खिलाफत में 12 दफा। और

हज़रते अली रज़ि० की खिलाफत में 4 दफा।

ये दिन आया मगर फिर भी किसी के भी ईद मिलादुन नबी मनाने का सुबूत नहीं है. जब उनके जैसी शख्सीयतों ने जिनके ईमान हमसे कही ज़्यादा कामिल थे और जो किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल पे आज के मुस्लमान से कही ज़्यादा ....बल्कि सबसे ज़्यादा अमल करने वालों में से हैं, कभी इस दिन को नहीं मनाया तो फिर तुम कौन होते हो दीन में नयी चीज़ ईजाद करने वाले ?

आइये इस बिदअत को ज़ोर-शोर से अंजाम देने वाले लोगों के पेश किये गए कुछ सुबूतों पे ग़ौर करते हैं :

"कह दीजिये, अल्लाह के इस फज़ल और रहमत पर लोगों को खुश होना चाहिए"

📗 सूरह १० यूनुस, आयत ५८।

उन लोगों ने इस आयत में रहमत से मुराद विलादते नबी तस्लीम कर लिया, जबकि रहमत से मुराद अल्लाह की किताब क़ुरआन से है।

खुद अहमद राजा खान की तर्जुमा करदह कंज़ुल ईमान तफ़्सीर में भी इसको क़ुरआन से मुराद किया गया है जिसे फैजाने क़ुरआन में इस तरह बयां किया गया है:-

तफ़्सीर में लिखा है

" हज़रते इबने अब्बास व हसन व क़तादह ने कहा के अल्लाह के फज़ल से इस्लाम और उसकी रहमत से क़ुरआन मुराद है, एक क़ौल ये है के फ़ज़्लुल्लाह से क़ुरान और रहमत से अहादीस मुराद हैं"

📗 फैजाने क़ुरआन , साफ ३११।

इसी तरह की और भी आयतें इनकी तरफ से दलील के तौर पे पेश की जाती हैं

"और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाओ"

📗 सूरह इब्राहिम, आयत ५।

"बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान है मुसलमानो पर, के उन में उन्ही में से एक रसूल भेजा"

📗 **सूरह आले इमरान, आयत १६४।**

हदीस भी सुबूत के तौर पे बयां की जाती है

जब अल्लाह के रसूल ﷺ से पीर के रोज़े के मुताल्लिक़ पूछा जाता है तो वो फरमाते हैं के इस दिन यानि पीर को ही मेरी विलादत भी हुई और पीर को ही नुज़ूले क़ुरआन की इब्तेदा हुई.

ऐसी और भी न जाने कई दलीलें वो पेश करते हैं मगर कहीं भी विलादते नबी की बात नहीं मिलती, न तो क़ुरआन की दलील से ही ये वाज़े होता है और न ही हदीस की बात से ऐसा कुछ लगता है, फिर लोगों ने अपने मतलब के हिसाब से कहाँ से मानी निकालना शुरू कर दिए?

जब भी क़ुरान की आयत रसूलल्लाह ﷺ पर नाज़िल होती तो आप सहाबए कराम को तफ़्सीर के साथ समझाते और उसपे अमल करने को कहते थे...... तो क्या आप ﷺ ने इस तीसरी ईद को अपनी आवाम से छुपा लिया था या फिर आप ﷺ को क़ुरआन के उन आयात के मतलब नहीं समझ आये थे (नौज़ुबिल्लाह) जिसे आज कुछ लोगों ने क़ुरान से इस ईद का मतलब निकाल लिया??

चले अगर उस वक्त किसी वजह से ये बात रसूलल्लाह ﷺ नहीं भी बता पाए तो फिर आपके सहाबा को भी ये बात पता न चली? अरे ये तो वो लोग थे के जिन्हें अगर छोटी से छोटी बात भी पता चलती तो उस पर अमल करना शुरू कर देते थे फिर क्या ये इतनी बड़ी बात को छोड़ देते, वो भी जो खुद रसूलुल्लाह ﷺ से जुडी हो??

अरे जाहिलों, अक़्ल के घोड़े दौड़ाओ और खुद ही इन बातों पे ग़ौर करो के जिस फेल से हमारे नबी का वास्ता नहीं, सहाबए किराम का वास्ता नहीं, ताबेईन का वास्ता नहीं उसे तुम दीन कह रहे हो, यक़ीनन तुमसे बड़ा गुमराह कोई नहीं.

अल्लाह फरमाता है "और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया"

सुरह ५ मैदा, आयात ३ ।

फिर तुम्हे क्या ज़रूरत आन पड़ी के तुम इस दीन में बिगड़ पैदा करने लगे??

अल्लाह से दुआ है के इन भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाए और हम सबको क़ुरान-ओ-सुनात पे अमल करने की तौफ़ीक़ अत करे।

(आमीन)

والله اعلم بالصواب

♦ आप ये बताएं की ये पोस्ट कितनी सही है और कितनी नहीं।

حامدا و مصلیا و مسلما

अब्दुल्ला:

सुनाऐं आज कैसे सुबह सुबह आ गए, दुकान पर नहीं गए?

जुनैद: ↓

आज तो ईद मीलादुन्नबी है, बाजार, दुकानें सब बंद हैं।

अब्दुल्ला: ↓

अच्छा तो आप आज ईद मना रहे हैं।

जुनैद: ↓

क्या आप नहीं मना रहे हैं?

अब्दुल्ला: ↓

ईदें तो इस्लाम में केवल दो ही हैं, (1) ईदुल फ़ितर और (2) ईदुलअज़हा।

जुनैद: ↓

यह तीसरी ईद भी तो है जिसे ईद मीलादुन्नबी कहते हैं।

अब्दुल्ला: ↓

अच्छा आप ज़रा ये बताएँ यह जो तीसरी ईद है, क्या यह ईद वाले दिन ईदगाह जाकर नमाज़ ईद अदा की जाती है?

जुनैदः ↓

ईद मीलादुन्नबी पर नमाज़ तो होती ही नहीं है।

अब्दुल्लाः ↓

बाकी दो ईदों की नमाज़ें फिर आप क्यों पढ़ते हैं?

जुनैदः ↓

वह तो पढ़नी चाहिए?

अब्दुल्लाः ↓

वह क्यों पढ़नी चाहिए।

जुनैदः ↓

इसलिए कि उनके पढ़ने का हुक्म है।

अब्दुल्लाः ↓

क्या ईद मीलादुन्नबी की नमाज़ पढ़ने का हुक्म नहीं है?

जुनैदः ↓

नहीं होगा इस लिए तो कोई नहीं पढ़ता।

अब्दुल्लाः ↓

क्या ईद मीलादुन्नबी मनाने का कहीं हुक्म है?

जुनैदः ↓

सुना तो नहीं कहीं हुक्म, मना भी तो नहीं है।

अब्दुल्लाः ↓

क्या उसकी नमाज़ ईद मना है?

जुनैदः ↓

मना तो वह भी नहीं है।

अब्दुल्लाः ↓

फिर आप क्यों नहीं पढ़ते?

जुनैदः ↓

आप कहना क्या चाहते हैं?

अब्दुल्लाः ↓

मैं बताना चाहता हूं कि इस्लाम में इस त्यौहार का कोई सबूत नहीं है, अगर यह ईद इस्लाम में होती तो बाकी दो ईदों की तरह उसकी नमाज़ भी होती, उसका सवाब हदीस में पाया जाता। अल्लाह के रसूल उसका हुक्म करते।

जुनैदः ↓

जो लोग यह त्यौहार मनाते हैं वे गलती करते हैं?

अब्दुल्लाः ↓

इस्लाम मुसलमानों के अमल का नाम नहीं, इस्लाम कुरान और हदीस का नाम है, जो बात कुरान व हदीस से साबित है वह दीन है, जो साबित नहीं वह दीन नहीं. अगर कोई इसे दीन बनाता है तो वह दीन में ज़्यादती करता है जो एक गंभीर अपराध है, उसी को बिदअत कहते हैं. आप स.अ.व. ने अपनी उम्मत को बिदअत से बहुत डराया है।

जुनैद: ↓

क्या सहाबा और ताबेईन के ज़माने में मीलादुन्नबी कोई मनाता था?

अब्दुल्ला: ↓

सवाल ही पैदा नहीं होता, सहाबा और ताबेईन के बाद किसी इमाम ने भी यह त्यौहार नहीं मनाया, अहले सुन्नत के चारों इमामों ने तो इस त्यौहार का नाम भी न सुना था। यह बिदअत 625 हिज्री से शुरू हुई है।

जुनैद: ↓

यह कैसे हो सकता है एक मुसलमान अल्लाह के रसूल से प्यार भी करता हो और उनका जन्म का दिन चुपचाप गुज़ार दे।

अब्दुल्ला: ↓

ऐसा हो सकता है और हुआ है। आप कभी तारीख में नहीं दिखा सकते कि सहाबा या ताबेईन और इमामों ने ईद मीलादुन्नबी मनाई हो. नबी स.अ.व. का प्यार किताब व सुन्नत पर अमल करने से पता चलता है न कि ईद मीलादुन्नबी मनाने से .

क्या 625 हिज्री से पहले लोगों को नबी से प्यार नहीं था? हालांकि नबी ने तो उस ज़माने को सबसे अच्छा ज़माना करार दिया है।

जुनैद: ↓

ईसाई अपने नबी के जन्म पर क्रिसमस मनाते हैं, हमारे नबी की शान तो सबसे ऊंची है, हम मुसलमान अपने नबी का बर्थडे क्यों न मनाएं?

अब्दुल्ला: ↓

ईसाई तो अपने नबी को अल्लाह का बेटा भी कहते हैं, क्या ईसाइयों की नकल में हम अपने नबी को खुदा का बेटा बना लें?

मेरे भाई!

ईसाइयों को कुरान व हदीस में इसीलिए तो गुमराह बताया है कि वह सब कुछ अपने नबी की तालीम के खिलाफ करते है,

क्रिसमस मनाना ईसाइयों का अपना अमल है यह ईसा अ. की तालीम नहीं है।

जुनैद: ↓

ईद मिलाद नबी कोई ग़लत रस्म है?

अब्दुल्ला: ↓

यदि यह अच्छा काम होता तो फिर रसूल ने और आप के साथियों रज़ियल्लाहु अन्हुम ने क्यों नहीं किया, क्या उस समय कोई कमी थी, जो सहाबा दो दो ईदें मना सकते थे उन्हें तीसरी ईद मनाने में क्या हर्ज था?

जुनैद: ↓

सहाबा के समय में कई काम नहीं होते थे जो आजकल होते हैं? आज हम वाहनों और विमानों पर यात्रा करते हैं, अपने पहले वाले इस्लाम का पालन करके गधों और घोड़ों पर सफ़र करें।

अब्दुल्ला: ↓

मेरे भाई! वैज्ञानिक आविष्कारों से इस्लाम में मिलावट नहीं होती, मज़हब में नई ईजाद से इस्लाम में मिलावट होती है नबी ने फरमाया: जो दीन में कोई नई बात पैदा करे इसे रद्द कर दिया जाएगा (बुखारी व मुस्लिम) इब्ने हजर इसकी तफ़सीर में लिखते हैं "यानी जिसने दीन के अंदर कोई नई बात निकाली तो वह गुमराही है स्पष्ट होगया इसे धर्म का काम और कार सवाब समझ रहे हो, ये सब

बिदअत और ग़लत हैं।जहां तक दुन्यावी चीजें हैं, इसके बारे में अल्लाह तआला क़ुरान में फ़रमाता है'' और हमने घोड़े और खच्चर और गधे पैदा किए ताकि आप उन पर सवार हो और (वह तुम्हारे लिए) रौनक और ज़ीनत (भी) और वह और चीजें भी पैदा करेगा जिनकी तुम्हें खबर नहीं। '' इस आयत में अल्लाह खुद कह रहा है कि वो चीजें भी उपयोग कर सकते हैं जिनका ज्ञान उस समय के लोगों को नहीं था। इसका मतलब यह हुआ कि सभी नई (वैज्ञानिक) ईजाद हम उपयोग कर सकते हैं।

जुनैद: ↓

तो फिर आप बच्चे के जन्म पर खुशी क्यों मनाते हैं?

अब्दुल्ला: ↓

खुशी मनाने और मनाते रहने में अंतर है .बच्चे के जन्म पर हर इंसान स्वाभाविक रूप से प्रसन्न होता है न कि धार्मिक रूप से, जहां तक खुशी मनाने का संबंध है तो इसके लिए इस्लाम ने सातवें दिन अक़ीक़ा करने का आदेश दिया है, अब आप बताएं कि बारह रबी उल अव्वल को ईद मनाने का आदेश शरीयत ने दिया है या कोई प्रेरणा दी है? हरगिज़ नहीं,

और इसके अलावा बच्चे के जन्म पर खुशी सिर्फ एक दिन मनाई जाती है हर साल नहीं।

जुनैद: ↓

कहते हैं कि अबू लहब ने आप (स.अ.व.) के जन्म पर दासी को मुक्त किया था।

अब्दुल्ला: ↓

अबू लहब को अपने भतीजे के जन्म पर खुशी हुई थी, वह दासी इसलिए मुक्त नहीं की थी कि एक नबी दुनिया में आए हैं, यह बात इतनी पसंदीदा थी तो क्या आप ने कभी भी अबू लहब की इस सुन्नत को जीवित करने का आदेश दिया? अबू लहब ने तो दुनिया के आम रिवाज के अनुसार ख़ुशी ज़ाहिर की, बच्चा तो किसी घर में पैदा हो ख़ुशी जरूर होती है, अबू लहब का गुलाम मुक्त करना इसलिए नहीं था कि इस दिन को ईद माना था।

और अगर अबू लहब के अमल को ईद मीलादुन्नबी का तर्क माना जाए तो इसका मतलब यह हुआ कि ईद मीलादुन्नबी सुन्नत नबी तो नहीं लेकिन अबू लहबी जरूर है।

जुनैद: ↓

सुना है कि पैग़म्बरे इस्लाम (स।) की सही जन्मतिथि में इतिहासकारों में अंतर है, सच्चाई क्या है?

अब्दुल्लाः ↓

अल्लाह ने जानबूझ कर उन्हें एक दिन पर सहमत नहीं होने दिया। ताकि उम्मत इस बिदअत से बची रहे।

यही हम अभी तक कहते हैं कि यह दिन पहले ज़माने में नहीं मनाया जाता था बाद में शुरू हुआ है, अगर बारह रबी उल अव्वल के दिन किसी भी रूप में आप (स.अ.व.) या बाद में किसी समय में मनाया जाता रहा होता तो सारे मुसलमान आप (स.अ.व.) की जन्मतिथि पर सहमत होते।

जुनैदः ↓

चलिए मान लिया कि पैग़म्बरे इस्लाम (स।) का जन्म दिन शुरू से नहीं मनाया जाता था लेकिन अब आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी साबित नहीं हो सका कि आप की सही जन्मतिथि क्या है?

अब्दुल्लाः ↓

देखिए तारीख विसाल पर सभी इतिहासकार सहमत है कि वह बारह रबी उल अव्वल ही है, लेकिन आमद की सही जन्मतिथि के बारे में अनुसंधान तो यही कहते है कि वह नौ रबीउल अव्वल है .

जुनैदः ↓

आखिर यह ईद मीलादुन्नबी आई फिर कहाँ से?

अब्दुल्ला:

बहरहाल यह बात तो साबित है कि रिसालत से अइम्मा के समय तक उसका नामोनिशान भी नहीं था। यह रस्म 625 हिज्री से शुरू हुई|

जुनैद: ↓

यह वास्तव में हम बुरा करते हैं, जबकि हमारे बड़ों ने ईद नहीं मनाई तो हम क्यों मनाएं।

अब्दुल्ला: ↓

जज़ाक अल्लाह खैर

अब आपकी समझ में मेरी बात आई।

जुनैद: ↓

बात तो समझ गया हूँ, अच्छा यह भी फरमादें कि जो लोग ईद मीलादुन्नबी मनाते हैं उनमें जुनून और इरादे तो नेक ही होते है और सही हदीस में है: अमल का दारो मदार इरादों पर है"

अब्दुल्ला: ↓

मेरे भाई सही हदीस में ये बात भी बताई जाती है अगर आपका अमल सुन्नत के खिलाफ हो तो वह स्वीकार नहीं होता अल्लाह के यहाँ अमल के क़ुबूल होने के लिए ईमान और यकीन के साथ सुन्नत के मुताबिक़ होना भी शर्त है वरना वह अमल बर्बाद है।

जुनैद: ↓

क्या ईद मीलाालनबी का बिल्कुल कोई इनाम नहीं?

अब्दुल्ला: ↓

भाई! जब उस का अस्तित्व ही इस्लाम में नहीं तो यह कार इनाम कैसे हो सकता है ?

यह तो नवीनता है, धर्म में वृद्धि कोई मामूली अपराध नहीं, आप तो इनाम की बात पूछते हैं, क़यामत के दिन तो ऐसे लोगों को हौज कौसर से पानी भी नसीब नहीं होगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद उन को करीब नहीं आने देंगे।

सुनिए!

हदीस में आता है, पैगंबर कहते हैं "क़यामत के दिन, मैं होज़े कौसर से अपने उम्मतियों को पानी पिला रहा हूँगा, मेरी उम्मत के कुछ लोगों पर फ़रिश्ते लाठीचार्ज करते होंगे, (हालांकि उनके हाथ पांव वज़ू के कारण चमक रहे होंगे) में पूछूँगा उनका क्या दोष है? उन्हें मेरी ओर आने दो, यह मेरे उम्मती हैं, जवाब मिलेगा: हे मुहम्मद (स.अ.व.)! आप नहीं जानते कि आप के बाद उन्होंने धर्म में नई ईजाद कर दी थीं,

जुनैद: ↓

वास्तव में मामला तो बड़ा खतरनाक है, आपने मुझे यह हदीस सुना कर बहुत अधिक डरा दिया है, बड़ी नवाज़िश कि आप ने मुझे सही रहनुमाई फरमाई। जज़ाकल्लाह

लहब ने जशने वीलादत मनाया मगर मिशने रीसालत पर पत्थर बरसाये अबुबकर ने जशन नहि मनाया मगर मिशने रीसालत को कन्धे पर ऊठाया

तुझे अबु लहब पसंद --------मुझे अबुबकर पसंद

तुझे जशन पसंद ---------मुझे मिशन पसंद

तुझे नाचना पसंद ----------मुझे ईत्तितिबा पसंद।

اللهم صل على سيدنا ونبينا وحبيبنا محمد وعلى آله وأصحابه وبارك وسلم تسليما كثيرا كثيرا

والله اعلم بالصواب